श्रीनागेशभट्टकृतः

परिभाषेन्दुशेखरः

PARIBHĀṢENDUŚEKHARA OF NAGEŚA BHAṬṬA

सम्पादकश्च

डॉ॰ हर्षनाथमिश्रः

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

नवदेहली

श्रीनागेशभट्टकृतः

परिभाषेन्दुशेखरः

PARIBHĀṢENDUŚEKHARA
OF
NAGEŚA BHAṬṬA

दुर्गाख्यसंस्कृतव्याख्यया हिन्दी भाष्येण च
समुपेतः
टीकाद्वयस्य लेखकः

सम्पादकश्च
डॉ॰ हर्षनाथमिश्रः
व्याकरणसाहित्याचार्यः, एम॰ ए॰, पी-एच॰ डी॰,
वरिष्ठो व्याख्याता

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
मानितविश्वविद्यालयः
(भारतशासन-मानवसंसाधनविकास-मन्त्रालयाधीनम्)
नवदेहली

विषयसूची

भूमिका: १-६८

सूत्र के भेदों का संक्षिप्तपरिचय (१-६) परिभाषा की परिभाषा, परिभाषाशब्द का सर्वप्रथम प्रयोग, अधिकार और परिभाषा में परस्पर भेद, पाणिनिप्रोक्त परिभाषासूत्र, उनका एक प्रकरणाभाव, (७-८) वार्तिककार के वार्तिक, जिनको परिभाषा-प्रकृतिक वचन कह सकते हैं और उनकी संख्या, (९-१०) परिभाषाओं के कार्य और प्रकार (११-१५) परिभाषाओं का आश्रयण, (१६-१८) व्याकरण का परिभाषा शास्त्र (१८) परिभाषाकार—व्याडि:—पाणिनीय तन्त्र के परिभाषाओं के लेखक (१९-२४) पाणिनीयतन्त्रेतर (शाकटायन से भोजदेव तक के) व्याकरणों में परिभाषासूत्र, अतिदेश और परिभाषा में अत्यन्तसाम्य(२४-२४) व्याडि के बाद पाणिनीयतन्त्रीय परिभाषाग्रन्थों पर वृत्तियों के लेखक:—पुरुषोत्तमदेव, जिनकी लघुवृत्ति परवर्ती लेखकों की वृत्तियों का आधार बनी और जिनका परिभाषापाठ परिभाषेन्दु के परिभाषाक्रम का आधार है (२९-३३) सीरदेव और उनकी वृहत्परिभाषावृत्ति (३३-३५) सीरदेव और नागेश के बीच की अवधि में परिभाषाग्रन्थों के दो लेखक—नीलकण्ठ दीक्षित और हरिभास्कर अग्निहोत्री (३५-३७) नागेशभट्ट (३७-३९) श्रीशेषाद्रि सुधी (३९-४०) परिभाषेन्दुशेखर—एकदृष्टि (४०-६९)परिभाषेन्दु और भाष्य में निर्दिष्ट परिभाषाओं की आकृति में भेद (४०-४१) भाष्य में ध्वनित परिभाषाएँ (४२) भाष्य में ज्ञापकादिकों के स्पष्ट निर्देश से रहित परिभाषाएँ(४)भाष्यानुक्त परिभाषाएँ (४३-४४) वर्गीकरण:—ज्ञापकसिद्धा (४४-४८) लोकन्यायसिद्धा (४८-५०) न्यायसिद्धा या शास्त्रीय युक्तिसिद्धा (५१-५३) वाचनिकी परिभाषा (५३-५४) सभी परिभाषाएँ ज्ञापक और न्याय से ही सिद्ध हैं (५५) कुछ परिभाषाओं के 'अनियमे नियमकारिणी'

परिभाषा का उपयोग तो नागेश ने "एकदेशविकृतमनन्यवत्" और 'पूर्वोत्तर' परिभाषाओं (३८ और ५४) के सन्दर्भ में किया है, परन्तु इसे अपनी परिभाषा की सूची में स्थान नहीं दिया। यह परिभाषा 'अन्तादिवच्च ६.१.८५ सूत्र के भाष्य में पठित[1] है, वहां इसकी सिद्धि के लिए लौकिक[2] न्याय भी बताया गया है। इसका फल 'अभीयात्'[3] है ही। भट्टोजिदीक्षित[4]ने भी इसे अपनाया है। किसी का मत है कि[5] उभयत आश्रयण में भी नागेश अन्तादिवद् मानते थे इसलिए उन्होंने इसे परिभाषाओं में स्थान नहीं दिया है।

"उत्सर्गसमानदेशा अपवादाः" इस परिभाषा की चर्चा परिभाषेन्दुशेखर में "अन्तरङ्गानपि विधीन्—प० ५३"के सन्दर्भ में की गयी है; वहां इसका ज्ञापक और उपयोग भी बताया गया है; परन्तु ग्रन्थ की सूची में शामिल करके इसे परिभाषा का दर्जा नहीं दिया गया है। आश्चर्य है कि किसी परिभाषाकार ने इसे परिभाषा का दर्जा नहीं दिया है। शेषाद्रिसुधी ने इसके सम्बन्ध में लिखा है कि कैयट ने इसे भाष्यकार के मत से भी ज्ञापक सिद्ध दिखाया है। किन्तु सुधी ने भी इसे परिभाषाओं की पंक्ति में नहीं बिठाया है। फिर नागेश ही इसको परिभाषा क्यों मानते?

अवतरण की उद्भावना

अवतरण परिभाषेन्दु की अपनी देन है। इससे इस ग्रन्थ की लक्ष्यप्रधानता, रूपप्रधानता या प्रक्रियाप्रधानता सिद्ध होती है। इस रीति के सर्वप्रथम उद्भावक धर्मकीर्ति थे। उन्होंने रूप को अपनी दृष्टि में रखकर अष्टाध्यायी सूत्र का इस तरह आह्वान किया था जिससे रूप का अवतरण हो जाय, रूपों की निष्पत्ति हो जाय। प्रक्रिया कौमुदी और सिद्धान्त कौमुदी में भी इसी रीति का अनुसरण किया गया है। धर्मकीर्ति ने जिस तरह रूपों के अवतरित होने के लिए अष्टाध्यायी से सम्बद्ध सूत्रों का आह्वान किया था; उसी तरह नागेश ने इस ग्रन्थ में रूपों के अवतरण के लिए परिभाषाग्रन्थों से परिभाषाओं का आह्वान किया है। धर्मकीर्ति की तरह नागेश की दृष्टि पहले लक्ष्यों पर गई है और वहां से गुजरती हुई वह परिभाषाओं पर उसी तरह पहुँची है जैसे धर्मकीर्ति या भट्टोजिदीक्षित आदि की सूत्रों पर। इसलिए

---

१. वृ० वृत्तौ सीरदेवः—इयं परिभाषा 'अन्तादिवच्चेत्यत्र भाष्यकारेण पठिता। तत्रोक्तो लौकिकोन्यायः। यथोभयोस्तुल्यबलयोरेकः प्रेष्यो भवति अविरोधार्थी उभयोरपि कार्ये न प्रवर्तते।—(प० ६०)

२. ल० वृत्तौ पुरुषोत्तमदेवः—लोक सिद्ध एवायमर्थः (प० ५१)

३. "तेन अभीयादित्यादिसिद्धिः (नीलकण्ठदीक्षित) (प० १२०)

४. अदादि इण् धातु (सि०कौ०)

५. दुर्गा० व्या० पृ०२२२

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

(भारतशासनमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनः)

56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी

नवदेहली-110058